KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/OCT-DEC2017/VOL-4/ISS-4/A1 PAGE NO.1-4
ISSN: 2348-4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

अनुसूचित जाति की महिलाओं की धार्मिक आकांक्षाएँ

[1]डा0 कविता गोयल
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, श्यामलाल सरस्वती (पी0जी0) महाविदयालय
शिकारपुर, बुलन्दशहर

ABSTRACT

भारतीय समाज अनेक धार्मिक संगठनों में विभक्त है। ये धार्मिक संगठन सामाजिक शक्ति को विश्वास के आधार पर संगठित करने में सहायक होते है। यह विश्वास केवल सैद्वान्तिक पक्ष का ही द्योतक नहीं बल्कि हमारे व्यवहारिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इसीलिए प्रसिद्व अमेरिकी शिक्षाविद ब्राउन का कथन है कि ''धर्म केवल विश्वास की ही चीज नही वरन् वास्तविक जीवनचर्या और आचरण है जिसके अर्न्तगत सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों प्रकार के वयवहार आते है।'' धर्म के व्यक्तिगत और सामाजिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए उन्होने धर्म के वैयक्तिक पक्ष को काफी मूल्यवान माना है। किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से धर्म की प्रकृति को उन्होने मुख्य रुप से सामाजिक ही स्वीकारा है। उनका कहना है कि ''समस्त सांस्कृतिक प्रतिमान को प्रभावित करने तथा बालक के व्यक्तित्व को सुविकसित करने में परिवार और विघालय की भाँति धर्म का भी उतना ही महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है।'' भारतीय जीवन दर्शन में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारे सांस्कृति एंव नैतिक मूल्यों के निर्माण में उसका विशेष योगदान रहा है। परिणामतः दोनो को एक दूसरे से अलग करना कठिन हैं । समाज और संस्कृति द्वारा निश्चित और परिभाषित मूल्य व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्माण करते हैं ये अभिवृत्तियाँ ही उसके व्यवहारो को एक निश्चित दिशा प्रदान करती हैं भारतीय समाज में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के क्षेत्र में दो प्रकार की स्थिति पायी जाती है। एक ओर परम्परागत सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य है जो शताब्दियों से भारतीय सामाजिक जीवन के अंग बने हुए है। दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति और परिवर्तन के नवीन कारकों के परिणामस्वरुप अनेक प्रकार के नवीन आधुनिक मूल्यों का भारतीय समाज में प्रवेश हुआ है। इन सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों को भारतीय समाज वैज्ञानिकों ने ''प्रक्रिया मूलकों संप्रत्यय से विवेचित किया है।'' जिसका मूल आशय संस्कृति मूलक ही है संगठनात्मक नहीं ।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org